ऋग्वेद में अन्तरिक्ष स्थानीय देवों का समीक्षात्मक अध्ययन

मीना यादव*

विश्व साहित्य का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त का एक अपना देवता है, जिसमें उस देवता की संस्तुति की गई है। ऋग्वेद में देवों के तीन निवास स्थानों-पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युस्थान का वर्णन है। उसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में भी देवों के निवास स्थान के विभाजन का वर्णन है। इससे मिलती-जुलती धारणा अथर्ववेद में भी हैं।

जगत में घटने या होने वाली प्रत्येक प्राकृतिक घटना के पीछे वैदिक ऋषि किसी दैवी शक्ति की सत्ता स्वीकार करते थे। उन्हीं शक्तियों को विविध देवता मानकर उनसे अपने अभीप्सित अर्थ की सिद्धि के लिए प्रार्थनायें किया करते थे। देवताओं की स्तुति करते समय ऋषि उनमें समस्त गुणों को आरोपित करते थे। वर्णन के इसी धारा-प्रवाह में श्रृंगार, वीर आदि विभिन्न रसों तथा उपमा, रूपक आदि अलंकारों का समावेश भी वैदिक मन्त्रों में हो गया है।

ऋग्वेद में देवताओं की उत्पत्ति के विषय में कोई निश्चित उल्लेख नहीं है, किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों में इनकी उत्पत्ति प्रजापति से बताई गई है। ऐतरेय ब्राह्मण का कथन है कि प्रजापति की इच्छा हुई की मैं एक से अनेक हो जाऊँ। उसने तप किया और उसके प्रभाव से पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक उत्पन्न हुए। तब उसने इन तीनों लोकों का मनन किया। इस चिन्तन से प्रत्येक का अभिमानी एक-एक देवता-पृथ्वी से अग्नि, अन्तरिक्ष से वायु तथा आकाश से सूर्य उत्पन्न हुए।

यास्क ने भी निरूक्त (७/२) में स्थान को आधार मानकर देवताओं की संख्या तीन बताई है-अग्नि को पृथिवी स्थानीय, वायु अथवा इन्द्र को अन्तरिक्ष स्थानीय तथा सूर्य को द्युस्थानीय बताया है।

स्थान के आधार पर देवों का वर्गीकरण-

पृथिवी स्थानीय देव- अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि।

अन्तरिक्ष स्थानीय देव- इन्द्र, वायु, रूद्र, मरूद्गण आदि।

द्युस्थानीय देव- सूर्य, सविता, पूषा, वरूण, आदित्यगण आदि।

इन्द्र- इन्द्र ऋग्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण देवता है। ऋग्वेद के २५० सूक्तों में इन्द्र की स्तुति स्वतन्त्र रूप में की गयी है तथा ५० सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ उसे स्तुत किया गया है। जिस प्रकार अग्नि और सूर्य क्रमशः पृथिवी और द्युलोक के अधिपति हैं उसी प्रकार इन्द्र अन्तरिक्ष लोक के अधिपति हैं।

ऋग्वेद के सम्पूर्ण दो सूक्तों में इन्द्र के जन्म का ही वर्णन किया गया है। उसके पिता द्यौ या त्वष्टा हैं। अग्नि और पूषा इसके भाई हैं और इन्द्राणी उसकी पत्नी है। ऋग्वेद में इन्द्र

***शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद**

का चित्रण मानवाकृति रूप में किया गया है। उसके विशाल शरीर, शीर्ष, भुजाओं एवं बड़े उदर का उल्लेख अनेक बार किया गया है। उसका मुख सुन्दर है। उसकी भुजायें भी वज्रवत् पुष्ट एवं कठोर है। वह भूरे वर्ण का देव है तथा सात रश्मियों से युक्त है।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।

ऋग्वेद की ऋचाओं के अनुसार इन्द्र के तीन गुण कहे गये हैं- महान् कार्यों को करने की शक्ति, अतुल पराक्रम और असुरों को युद्ध में जीतना। इन्द्र का प्रमुख शस्त्र वज्र है इसी कारण उन्हें वज्री, वज्रिन तथा वज्रबाहु के नाम से भी पुकारा जाता है। अत्यधिक शक्तिशाली होने के कारण उसको शक्र, शचीपति, शचीवान्, शतक्रतु आदि नामों से पुकारा जाता है।

इन्द्र बहुत पराक्रमी है। उसने हिलते हुए पहाड़ों को स्थिर करके उनकी रक्षा की और आकाश एवं पृथिवी को स्थिर किया तथा उनको फैलाया। इन्द्र अपने उपासकों की रक्षा एवं सहायता करता है तथा उनको धन-धान्य से पूर्ण करता है, अतः वह मघवा कहलाता है। इन्द्र उषा के रथ को हिलाने वाला है। वह सूर्य के घोड़ों को रोक लेता है और सोम को जीत लेता है।

यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा बलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः।।

इन्द्र का वरूण के साथ बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। जब इन्द्र विजय प्राप्त करते हुए आगे बढ़ता है तो वरूण विजित प्रदेशों में अधिकार, नियमों और व्यवस्था की स्थापना करता है। इन्द्र का वायु, सोम, बृहस्पति, पूषन् और विष्णु के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। मरूत् का मित्र होने के कारण इन्द्र को मरूत्सखा, मरूत्वान् आदि नामों से पुकारा जाता है।

निरूक्तकार यास्क कहते हैं कि-या च का च बलकृतिः इन्द्रकर्मैव तत् अर्थात् जो भी बल और दीप्ति के कार्य हैं वे सब इन्द्र के कार्य हैं। लोकमान्य तिलक वृत्र को हिम का प्रतीक मानते हैं जिसे इन्द्र अर्थात् सूर्य नष्ट करते हैं। हिलब्रान्ट नामक पाश्चात्य विद्वान् ने यह सिद्ध किया है कि इन्द्र ही वृष्टि का देवता था।

रूद्र- ऋग्वेद में रूद्र को मरूतों का पिता एवं स्वामी कहा गया है। इस देव के वर्णन से सम्बन्धित केवल तीन सूक्त ही प्राप्त होते हैं, फिर भी रूद्र को शक्तिशाली एवं भयंकर रूप में चित्रित किया गया है।

आ ते पितर्मरूतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः।
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्र जायेमहि रूद्र प्रजाभिः।।

रूद्र को औषधियों के चिकित्सकों में श्रेष्ठ माना गया है। रूद्र के बाह्य रूप का मनोहारी वर्णन मिलता है। वह भूरे रंग का है। वह वज्र तथा धनुष-बाण को धारण करता है। जगत का विनाश करने में यह रूद्र शूकर के तुल्य है। यह शूकर लाल रंग का स्वर्ग का शूकर है और उसको 'अरूष' कहते हैं। वह शूकर विशालकाय है।

शूद्र शक्तिशाली से भी अधिक शक्तिशाली है, शीघ्रगामी है और फुर्तीला है। कोई देवता उसका अतिक्रमण नहीं कर सकता। वह संसार का स्वामी और पिता है, उदार, आशुतोष और शिव

है। वह जगत के पापों और पुण्यों का निरीक्षण करता है। उसका क्रोध किसी की परवाह न करने वाला, न बदलने वाला, सहन न किया जा सकने वाला और बीभत्स है। रूद्र को देवों का अधिदेव कहा गया है।

ऋग्वेद में रूद्र के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत वर्णन नहीं है, फिर भी वह आर्यों के प्रमुखतम देवता के रूप में प्रतिष्ठित है। रूद्र का अग्नि के साथ निकट सम्बन्ध है। रूद्र को कल्याणकारी शिव भी कहा गया है। रूद्र केवल भयानक और दण्ड देने वाला ही नहीं है, अपितु कष्टों से बचाता भी है और दया का दान भी करता है। अतः उसका रूप एक ओर जहाँ कठोर है, वहीं दूसरी ओर कोमल भी है। रूद्राष्टाध्यायी और यजुर्वेद मे रूद्र को शत्रुओं को प्रतिकार करने में अनुपम सामर्थ्य से युक्त कहा गया है।

मरूत्- मरूत् अकेला देवता नहीं है, अपितु देवों के एक समूह का नाम मरूत् है। मरूतों की स्तुति ४२ सूक्तों में है। मरूत् देवता आँधियों के देवता हैं और वृष्टि कराते हैं। ऋग्वेद में विपत्तियों से रक्षा करने और रोगों के निवारण के लिए इनसे प्रार्थना की गयी है। इनकी प्रधान औषधि जल है।

मरूत् बड़े पराक्रमी देवता हैं। ये रूद्र और पृश्नि के पुत्र कहे गये हैं। इनकी पत्नी रोदसी इनके रथ पर विराजमान रहती है। ये स्वर्ण के समान स्वर्णिम और अग्नि के समान दीप्तिमान हैं। केयूर और वलय इनके आभूषण हैं। ये सुन्दर मालायें, सुनहरी चोगे, भूषण और शिरस्त्राण पहनते हैं। इनके रथ बिजलियों की तरह चमकते हैं।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन्नुद्रस्य सूनवः सुदंससः।
रोदसी हि मरूतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः।।

मरूत् को सामान्यतः आँधी एवं जल-प्रलय का देवता कहा गया है, परन्तु वे अपने भक्तों की रक्षा भी करते है। ये पहाड़ों को हिला देते हैं और द्युलोक एवं पृथिवी लोक इनके भय से काँपते हैं। ये सूर्य को ढक लेते हैं और वृक्षों को जंगली हाथियों के समान गिरा देते हैं।

मरूत् इन्द्र के विशेष सहायक हैं। वृत्र के वध के समय उसकी सहायता करते हैं। ये गायक भी हैं तभी तो इन्द्र द्वारा दैत्यों का वध करने पर ये उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं तथा सोम रस निकलाते हैं। मरूत् देवता का वर्णन अग्नि और पूषा के साथ भी किया गया है।

'देव' शब्द दिव् धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है-चमकना या प्रकाशित होना। यास्क ने देवता का अर्थ किया है-'देवो दानाद् द्योतनाद् दीपनाद् वा' अर्थात् पदार्थ को देने वाले, प्रकाशित होने वाले को देवता कहा जाता है। अतः देव का अर्थ प्रकाशमान या भास्वर है। देव स्वतः प्रकाशित होते हुए मनुष्य के जीवन को प्रकाशित करते हैं। अन्तरिक्ष स्थानीय देवों की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि ये मानव जीवन से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित हैं। वैदिक युग से लेकर आज तक इनका तादात्म्य मानवीय जीवन से रहा है।

सन्दर्भ -

- उपाध्याय, बलदेव (१९८०). भारतीय साहित्य एवं संस्कृति. वाराणसी : शारदा संस्थान, ३७वीं रवीन्द्रपुरी, दुर्गा कुण्ड।
- त्रिपाठी, विश्वम्भरनाथ. वेद चयनम्. इलाहाबाद : विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वेदपीठ प्रकाशन।
- त्रिपाठी, गयाचरण (१९८२). वैदिक देवता उद्भव और विकास प्रथम एवं द्वितीय खण्ड. भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली वाराणसी. प्र.सं.।
- त्रिपाठी, डॉ० हरिशंकर. वेद मीमांसा. इलाहाबाद : वेदपीठ प्रकाशन।
- द्विवेदी, कपिलदेव. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- दीक्षित, लक्ष्मीदत्त (१९८०). वेद मीमांसा सूत्रकार एवं भाष्यकार. दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स, प्र.सं.।
- राय, राजकुमार (१९६१). वैदिक माइथोलाजी वैदिक पुराकथाशास्त्र. वाराणसी : चौखम्बा विद्या भवन।
- शास्त्री, डा. हरिदत्त (१९८०). ऋक् सूक्त संग्रह. मेरठ : डा. कृष्ण कुमार साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार।

******